# जानिए आपके प्राण कहां से निकलेंगे?

प्रत्येक व्यक्ति अलग इंद्रिय से मरता है। किसी की मौत आँख से होती है, तो आँख खुली रह जाती है। हंस आंख से उड़ा। किसी की मृत्यु कान से होती है। किसी की मृत्यु मुंह से होती है, तो मुंह खुला रह जाता है।

अधिक लोगों की मृत्यु जननेंद्रिय से होती है, क्योंकि अधिक लोग जीवन में जननेंद्रिय के आसपास ही भटकते रहते हैं, उसके ऊपर नहीं जा पाते।

आपकी जिंदगी जिस इंद्रिय के पास जीयी गई है, उसी इंद्रिय से मौत होगी। औपचारिक रुप से हम मृतक को जब मरघट ले जाते हैं तो उसकी कपालक्रिया करते हैं, उसका सिर भेदते हैं। वह सिर्फ प्रतीक है। पर समाधिस्थ व्यक्ति की मृत्यु उस तरह होती है। समाधिस्थ व्यक्ति की मृत्यु सहस्रार से होती है।

जननेंद्रिय सबसे नीचा द्वार है। जैसे कोई अपने घर की नाली में से प्रवेश करके बाहर निकले। सहस्रार, जो तुम्हारे मस्तिष्क में है द्वार, वह श्रेष्ठतम द्वार है।

जननेंद्रिय पृथ्वी से जोड़ती है, सहस्रार आकाश से। जननेंद्रिय देह से जोड़ती है, सहस्रार आत्मा से। जो लोग समाधिस्थ हो गए हैं, जिन्होंने ध्यान को अनुभव किया है, जो बुद्धत्व को उपलब्ध हुए हैं, उनकी मृत्यु सहस्रार से होती है।

उस प्रतीक में हम अभी भी कपालक्रिया करते हैं। मरघट ले जाते हैं, बाप मर जाता है, तो बेटा लकड़ी मारकर सिर भेदता है।

प्राण तो निकल ही चुके, अब काहे के लिए दरवाजा खोल रहे हो? अब निकलने को वहाँ कोई है ही नहीं। मगर प्रतीक, औपचारिक, आशा कर रहा है बेटा कि बाप सहस्रार से मरे, मगर बाप तो मर ही चुका है।

यह दरवाजा मरने के बाद नहीं खोला जाता, यह दरवाजा जिंदगी में खोलना पड़ता है। इसी दरवाजे की तलाश में सारे योग, तंत्र की विद्याओं का जन्म हुआ। इसी दरवाजे को खोलने की कुंजियाँ हैं योग में, तंत्र में।

इसी दरवाजे को जिसने खोल लिया, वह परमात्मा को जानकर मरता है। उसकी मृत्यु समाधि हो जाती है इसलिए हम साधारण आदमी की कब्र को कब्र कहते हैं, फकीर की कब्र को समाधि कहते हैं, समाधिस्थ होकर जो मरा है।

प्रत्येक व्यक्ति उस इंद्रिय से मरता है, जिस इंद्रिय के पास जीया। जो लोग रुप के दीवाने हैं, वे आंख से मरेंगे; इसलिए चित्रकार, मूर्तिकार आँख से मरते हैं। उनकी आंख खुली रह जाती है। जिंदगीभर उन्होंने रुप और रंग में ही अपने को तलाशा, अपनी खोज की। संगीतज्ञ कान से मरते हैं। उनका जीवन कान के पास ही था। उनकी सारी संवेदनशीलता वहीं संगृहीत हो गई थी। मृत्यु देखकर कहा जा सकता हैं आदमी का पूरा जीवन कैसा बीता। अगर तुम्हें मृत्यु को पढ़ने का ज्ञान हो, तो मृत्यु पूरी जिंदगी के बाबत खबर दे जाती है कि आदमी कैसे जीया; क्योंकि मृत्यु सूचक है, सारी जिंदगी का सारा निचोड़ है आदमी कहाँ जीया।

मृत्यु के समय जीव के साथ क्या घटित हो रहा होता है उसका वहाँ अन्य लोगों को अंदाज नहीं हो पाता लेकिन घटनाएं तेज़ी से घटती हैं। मृत्यु के समय व्यक्ति की सबसे पहले वाक उसके मन में विलीन हो जाती है। उसकी बोलने की शक्ति समाप्त हो जाती है।

उस समय वह मन ही मन विचार कर सकता है लेकिन कुछ बोल नहीं सकता। उसके बाद दृष्टि और फिर श्रवण इन्द्रिय मन में विलीन हो जाती हैं। उस समय वह न देख पाता है, न बोल पाता है और न ही सुन पाता है।

उसके बाद मन इन इंद्रियों के साथ प्राण में विलीन हो जाता है उस समय सोचने समझने की शक्ति समाप्त हो जाती है, केवल श्वास-प्रश्वास चलती रहती है।

इसके बाद सबके साथ प्राण सूक्ष्म शरीर मे प्रवेश करता है फिर जीव सूक्ष्म रुप से पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु और आकाश (पंच तन्मात्राओं) का आश्रय लेकर हृदय देश से निकलने वाली 101 नाड़ियों में से किसी एक में प्रवेश करता है।

हृदय देश से जो 101 नाड़ियाँ निकली हुई है, मृत्यु के समय जीव इन्हीं में से किसी एक नाड़ी में प्रवेश कर देह-त्याग करता है। मोक्ष प्राप्त करने वाला जीव

जिस नाड़ी में प्रवेश करता है, वह नाड़ी हृदय से मस्तिष्क तक फैली हुई है। जो मृत्यु के समय आवागमन से मुक्त नहीं हो रहे होते वे जीव किसी दूसरी नाड़ी में प्रवेश करते हैं।

जीव जब तक नाड़ी में प्रवेश नही करता तब तक ज्ञानी और मूर्ख दोनों की एक गति एक ही तरह की होती है। नाड़ी में प्रवेश करने के बाद जीवन की अलग अलग गतियाँ होती हैं।

श्रीआदि शंकराचार्य जी का कथन है कि 'जो लोग ब्रह्मविद्या की प्राप्ति करते हैं वो मृत्यु के बाद देह ग्रहण नही करते, बल्कि मृत्यु के बाद उनको मोक्ष प्राप्त हो जाता है'। श्रीरामानुज स्वामी का कहना है 'ब्रह्मविद्या प्राप्त होने के बाद भी जीव जीव देवयान पथ पर गमन करने के बाद ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है, उसके बाद मुक्त हो जाता है'।

देवयान पथ के संदर्भ में श्रीआदि शंकराचार्य जी ने स्पष्ट उल्लेख किया है कि 'जो सगुण ब्रह्म की उपासना करते हैं वे ही सगुण ब्रह्म को प्राप्त होते हैं और जो निर्गुण ब्रह्म की उपासना कर ब्रह्मविद्या प्राप्त करते हैं वे लोग देवयान पथ से नहीं जाते'।

अग्नि के सहयोग से जब स्थूल शरीर नष्ट हो जाता है, उस समय सूक्ष्म शरीर नष्ट नहीं हुआ करता।

मृत्यु के बाद शरीर का जो भाग गर्म महसूस होता है, वास्तव में उसी स्थान से सूक्ष्म शरीर देह त्याग करता है इसलिए वह स्थान थोड़ा गर्म महसूस होता है।

गीता के अनुसार जो लोग मृत्यु के अनंतर देवयान पथ से गति करते हैं उनको 'अग्नि' और 'ज्योति' नाम के देवता अपने अपने अधिकृत स्थानों के द्वारा ले जाते हैं। उसके बाद 'अहः' अथवा दिवस के अभिमानी देवता ले जाते हैं। उसके बाद शुक्ल-पक्ष व उत्तरायण के देवता ले जाते हैं।

थोड़ा स्पष्ट शब्दों में कहे तो देवयान पथ में सबसे पहले अग्नि-देवता का देश आता है फिर दिवस-देवता, शुक्ल-पक्ष, उत्तरायण, वत्सर और फिर आदित्य देवता का देश आता है। देवयान मार्ग इन्हीं देवताओं के अधिकृत मार्ग से ही होकर गुजरता है।

उसके बाद चन्द्र, विद्युत, वरुण, इन्द्र, प्रजापति तथा ब्रह्मा, क्रमशः आदि के देश पड़ते हैं। जो ईश्वर की पूजा-पाठ करते हैं, भक्ति करते हैं वो इस मार्ग से जाते हैं और उनका पुनर्जन्म नहीं होता तथा वो अपने अभीष्ट के अविनाशी धाम चले जाते हैं।

पितृयान मार्ग से भी चन्द्रलोक जाना पड़ता है, लेकिन वो मार्ग थोड़ा अलग होता है। उस पथ पर धूम, रात्रि, कृष्ण-पक्ष, दक्षिणायन आदि के अधिकृत देश पड़ते हैं अर्थात ये सब देवता उस जीव को अपने देश के अधिकृत स्थान के मध्य से ले जाते हैं।

चन्द्रलोक कभी अधिक गर्म तो कभी अत्यधिक शीतल हो जाता है। वहाँ अपने स्थूल शरीर के साथ कोई नहीं रह सकता, लेकिन अपने सूक्ष्म शरीर (जो मृत्यु के बाद मिलता है) कि साथ चन्द्रलोक में रह सकता है।

जो ईश्वर पूजा नहीं करते, परोपकार नही करते, हर समय केवल इन्द्रिय सुख-भोग में अपना जीवन व्यतीत करते हैं, वे लोग मृत्यु के बाद न तो देवयान पथ से और न ही पितृयान पथ से जाते है बल्कि वे पशु योनि (जैसी उनकी आसक्ति या वासना हो) में बार-बार यही जन्म लेकर यही मरते रहते हैं।

जो लोग अत्यधिक पाप करते है, निरीह और असहायों को सताने में जिनको आनंद आता है, ऐसे नराधमों की गति (मृत्य के बाद) निम्न लोकों में यानी कि नरक में होती है। यहाँ ये जिस स्तर का कष्ट दूसरों को दिए होते हैं उसका दस गुणा कष्ट पाते हैं। विभिन्न प्रकार के नरकों का वर्णन भारतीय ग्रंथों में दिया गया है।

अतः नारायण का स्मरण सदैव करें। समय बीतता जा रहा है। जीवन क्षणभंगुर है। ♦♦♦

## यमराज के ये गुप्तचर हर पल आप पर नजर रखते हैं ...

कई बार हम मनुष्य जानते बूझते हुए ऐसी गलती करते हैं जो धर्म विरुद्ध होता है। हमें लगता है कि हम जो काम कर रहे हैं उसे कोई देख नहीं रहा है जबकि सच यह है कि हम पर चौबीस घंटे यमराज के गुप्तचर की नजर रहती है।

हम यह बात उस पुराण के आधार पर कह रहे हैं जिसमें भगवान विष्णु ने गरुड़ को मृत्यु के बाद की स्थितियों को बताया है। इस पुराण का नाम है गरुड़ पुराण। इस पुराण में बतया गया है कि जब मृत्यु के बाद यमराज के सामने यमदूत आत्मा को लेकर पहुंचते हैं तब यमराज अपने सहयोगी चित्रगुप्त से व्यक्ति के कर्मों का लेखा-जोखा बताने के लिए कहते हैं।

यमराज की आज्ञा मिलने पर चित्रगुप्त गुप्तचर को बुलाते हैं। गरुड़ पुराण में यमदूत के गुप्तचर का नाम श्रवण बताया गया है। इनकी पत्नी का नाम श्रवणी है। यह ब्रह्मा के पुत्र हैं। दोनों धरती, आकाश और पाताल में विचरण करते रहते हैं। व्यक्ति जो भी कर्म करते हैं उन्हें ये दूर से देख और सुन लेते हैं।

पुरुषों के कर्म को श्रवण देखते हैं और स्त्रियों के कर्मों को श्रवणी देखती हैं। यह यमराज को व्यक्ति के पाप और पुण्यों की जानकारी देते हैं। इनके द्वारा दी गयी जानकारी की पुष्टि सूर्य, चन्द्र, अनल, वायु, दोनों संध्याएं करती हैं। इसके बाद चित्रगुप्त से विचार-विमर्श करके यमराज व्यक्ति को दंड देते हैं।

देवी भागवत् में कहा गया है कि संसार को उत्पन्न करने वाली शक्ति महालक्ष्मी माता हैं। सरस्वती, लक्ष्मी और काली यह सभी इन्हीं के स्वरूप से उत्पन्न हुई हैं। जिन पर महालक्ष्मी माता की कृपा हो जाती है उसकी सभी मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं।

इन्हीं महालक्ष्मी माता का एक मंदिर भगवान शिव की नगरी काशी में बसा हुआ है जिसे आज बनारस के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर को शक्तिपीठ के रुप में भी मान्यता प्राप्त है। यहाँ माता महालक्ष्मी की पूजा यूं तो सालों भर होती है लेकिन श्राद्ध के दिनों में इसका महत्व बढ़ जाता है।

इस मंदिर के विषय में मान्यता है कि श्राद्ध के १६ दिनों में यानी भाद्रपद पूर्णिमा से लेकर अमावस्या तक जो व्यक्ति नियमित महालक्ष्मी का व्रत रखकर पूजा अर्चना करता है उसकी मनोकामना महालक्ष्मी माता पूरी करती हैं। यही कारण है कि श्राद्ध के दिनों में यहाँ काफी संख्या में श्रद्धालु आते हैं।

इस मंदिर की एक बड़ी ही रोचक मान्यता है कि माता को सिंदूर, बिंदी, महावर सहित ऋंगार की अन्य वस्तुएं अर्पित की जाती हैं। इनमें एक सोलह गांठों वाला धागा भी शामिल होता है। मंदिर के पूजारी इस धागे को माता का स्पर्श करवाकर श्रद्धालु को देते हैं। माना जाता है कि इस धागे में